Semester IV

"हाई रिनॉसा"

Unit I (हाई रिनॉसा से रोकोको)

(A)

"हाई रिनासाँ, चरम पुनरुत्थान काल, कला का स्वर्णकाल, नव जागरण काल, ~~नव जागरण काल~~

इटालियन हाई रिनासां मूलत: फ्लोरेन्स नगर के कलाकारों की ही देन थी, इटालियन कला इतिहास में सम्भवत: ऐसा कोई काल नहीं जिसे "स्वर्णकाल" के नाम समझा जाता हो, परन्तु सुप्रसिद्ध इतिहासकार व चित्रकार वसारी ने स्वयं ही 16 वीं शती की शुरुआत से इटालियन कला के इस महानतम युग "हाई रिनॉसा" का शुभारम्भ माना है।

फ्लोरेन्स नगर के महान कलाकारों की प्रबल जिज्ञासा, अटूट लगन, अथक परिश्रम और सदियों की कला साधना के फल स्वरूप निरन्तर परिष्कृत व विकसित होते-2- इटालियन कला 15 वीं शती के अन्तिम दौर और 16 शती के प्रारम्भिक चरण में पूर्ण ~~परिपक्व~~ होकर शुरु होती है। इस युग में केवल प्राचीन यूनानी शास्त्रीय कला का पुनरुत्थान ही नहीं अपितु नया जन्म हुआ था। इसके परिणाम स्वरूप इटालियन कलाकार बुद्धिवाद व नैतिकता के बन्धनों में बाँधा न जा सका।

चरम पुनरुत्थान काल में यद्यपि धर्म का भी चित्रण हुआ है। चित्रों में रंग, रूप का महत्व हो गया, विषय की महत्ता न थी इस प्रकार जहाँ एक ओर नई कला पर भी धर्म की मुहर लगाई गई वहीं दूसरी ओर इसने धार्मिक बन्धनों से स्वयं को सर्वथा मुक्त कर लिया, इटालियन हाई रिनॉसा की तीन प्रमुख उपलब्धियाँ हैं, (1) ल्योनार्डो दा विन्सि (2) माइकेलेन्जलो तथा (3) रैफेल

(1) "ल्योनार्डो दा विन्सि" (1452—1519)

ल्योनार्डो हाई रिनॉसा का प्रथम और बहुमुखी सर्वाधिक प्रतिभाशाली व्यक्तित्व था। इसे "वन्डर ऑफ दा एज कहा गया है" यही एक मात्र कलाकार था जिसने हाई रिनासा के समस्त चारित्रिक लक्षणों का सर्वप्रथम प्रत्यक्षीकरण किया था इसके विषय में कहा जाता है। कि "ल्योनार्डो केवल कलाकार ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व की एक महान विभूति है"

ल्योनार्डो का जन्म फ्लोरेन्स के विन्सी नामक स्थान पर 15 वीं शताब्दी के मध्य 1452 में हुआ था। यह फ्लोरेन्स के एक वकील का अवैध पुत्र था (1)

- 1 पश्चिम की कला, G.K. agarwal P-122.

बाल्यकाल में ही उसने बहुत सी चीजें सीख ली थी इतिहासकार वसारी के अनुसार "ल्योनार्डो बाल्यकाल से ही होनहार था" इसकी प्रारम्भिक शिक्षा सुप्रसिद्ध चित्रकार "वेरोक्चियो" की चित्रशाला में हुई थी वह भी अपने गुरु से आगे बढ़ गया था (जैसे चिमेबू से ज्योतो) उसकी बौद्धिक क्षमता इतनी तीव्र थी कि उसने शरीर शास्त्र, आलोकिक विद्या तथा अन्य अनेक क्षेत्रों में उन सम्भवनाओं की पहले ही कल्पना कर ली थी जिनका आगे चल कर सफल प्रयोग किये गये उसकी रुचियों और कार्य क्षेत्र की विविधता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि उसने जिन अनेक कार्यों को आरम्भ किया उनमें से बहुत कम को ही पूर्ण कर पाया इसमें मुख्य रूप से विश्व विख्यात चित्र "मोनालिसा" है।

इसने हजारों रेखा चित्र बनाये, अनेक चित्र रंगे, किन्तु वह थोड़े ही चित्रों को पूर्ण कर पाया था। इसकी कृतियो में अदृश्य के दर्शन की लालसा दृष्टिगोचर होती है। इसने अपने युग की कला के विकास की सारणी को अपने कठिन परिश्रम के रस से सींचकर आगे बढ़ाया। इसका व्यक्तित्व व कृतित्व इतना विराट था. कि किसी भी निश्चित लक्ष्य को दृष्टिपथ में रख कर उसने कला की जो उन्नति की वह उसमें बहुमुखी भाव धारायें और विचित्र कल्पनाओं में एक तूफान सा लाने में समर्थ हुआ वह बहुमुखी प्रतिभाशाली कलाकार था छाया, प्रकाश को तो वह मास्टर था उसका कहना था कि "चित्र एक आध्यात्मिक वस्तु है"

थियोफाइल गॉतियार के शब्दों में "एक सर्व श्रेष्ठ चित्र, व्यक्ति चित्र, भित्ति चित्र, व्यंग चित्र का सृजन कर उसने एक विशाल घोड़े का नमूना (सैम्पिल) बनाने में अपना अधिकांश समय व्यतीत किया. तथा बाल्यकाल में ही उसने एक जानवर का चित्र इतना सजीव बनाया कि उसके पिता को उस जानवर के जीवित होने का भ्रम हो गया

यह स्वभाव से धीरे-२ किन्तु सधकर कार्य करता था जिसका उदाहरण व विश्व प्रतिष्ठित-चर्चित चित्र "मोनालिसा" है। सर विलियम आरपेन के अनुसार:— "यह चित्र न केवल मोनालिसा के रूप की अभिव्यक्ति मात्र है। बल्कि नारी जाती की वह रहस्यमयी पहेली है। जिसे आज तक बूझा न जा सका"